BOMRIM

Bulletin on Microvita Research and Integrated Medicine

Official Bulletin of Society for Microvita Research and Integrated Medicine (SMRIM)

(Registered under Societies Registration Act 28, 1958 (Raj.) No. 73/UDR/08-09)

Vol. 1 **March 2009** **No. 1**

✍ ***सम्पादकीय***

माइक्रोवाइटा का रहस्य

मानव मन की यह प्रवृत्ति है कि जो हम नहीं जानते उस अज्ञानता को छिपाने के लिये कह देते है कि उसका अस्तित्व नहीं है या अधिक चतुराई से कहते है कि उसका कोई आकार नहीं है, वह अमूर्त है, निराकार है। इस ब्रह्माण्ड में जो भी हमारे चेतन्य बोध के दायरे में आता है, हम उसे कहते है "वह है" और जो इन्द्रियों की परिधि के बाहर है उसे कहते है "वह नहीं है"। इसका सीधा–साधा अर्थ है कि हमारा संसार हमारे ज्ञानेन्द्रियों के परिसिमन तक ही सीमित है। इतना ही नहीं जब हम जान जाते हैं कि अमुक वस्तु का अस्तित्व है परन्तु उसके अन्य गुणों से अनजान हैं तो हम कहते हैं यह "रहस्यमय" है। मानव मन की परिधि के बाहर का सम्पूर्ण संसार रहस्यमय है – और रहस्यमय है माइक्रोवाइटा का विस्मयकारी संसार।

शक्तिशाली इलेक्ट्रोन माइक्रोस्कोप से जहाँ तक विज्ञान की नजर जा सकती हैं वहाँ तक तो उसने विभिन्न व्याधियों के कारणों का पता लगा लिया हैं, लेकिन क्या उससे आगे कुछ नहीं? क्या वाइरस सूक्ष्मतम् जीव हैं ?क्या उससे सूक्ष्म कुछ नहीं ? हो सकता है, लेकिन क्योंकि हम उसे देख नहीं सकते अतः उसके अस्तित्व से अनभिज्ञ हैं। लेकिन आँखों से न दिखना किसी के अस्तित्व का न होना तो नहीं है ? बहुत कुछ केवल अनुभव किया जाता हैं और कुछ तो केवल भावगम्य हैं। इसी सन्दर्भ में महान मनीषी, दार्शनिक एवं वैज्ञानिक श्री प्रभात रंजन सरकार ने 1987 में एक नये सिद्धान्त का प्रतिपादन किया, वह हैं माइक्रोवाइटा (अणु जीवत, अथवा सूक्ष्मजीवत) का सिद्धान्त। माइक्रोवाइटम, लेटिन भाषा से बना शब्द हैं जिसका अर्थ है जीव की सबसे छोटी इकाई सबसे सूक्ष्म इकाई। बहुवचन में इसे कहा जाता है माइक्रोवाइटा।

श्री सरकार के अनुसार माइक्रोवाइटा सूक्ष्मतर जीव हैं तथा भूमा जगत का रहस्यमय अभिप्रकाश हैं। ये जीव व जड़ की सीमा रेखा पर स्थित विस्मयकारी अस्तित्व हैं। भौतिकी की सूक्ष्मतम इकाई इलेक्ट्रोन तथा मनस्धातु की अन्तिम इकाई एक्टोप्लाज्म के बीच अणु जीवत् का ही सेतु है। तथाकथित आधुनिक विज्ञान द्वारा अभी तक यही समझा जाता रहा है कि कार्बन के परमाणु से ही समस्त सृष्टि की रचना हुई है। लेकिन जब कार्बन के परमाणु भी प्रयोगशालाओं में विभाजित किये जा सकेंगे तब यह सिद्ध होगा कि वे करोड़ों अणुजीवत का ही धनीभूत रूप हैं। इन माइक्रोवाइटा का धनीभूत रूप ही इलेक्ट्रोन व एक्टोप्लाज्म है।

सूक्ष्मता के आधार पर माइक्रोवाइटा को तीन श्रेणियों में विभक्त किया जा सकता हैं। प्रथम वो जो उच्च शक्ति इलेक्ट्रोन माइक्रोस्कोप से देखे जा सकते हैं। यह इनका स्थूलतम प्रकार है तथा सम्भवतः इन्हें ही वैज्ञानिकों ने वाइरस का नाम दिया है। वाइरस से कुछ बीमारियों के होने का सम्बन्ध सर्वविदित हैं। दूसरे वो जो माइक्रोस्कोप की शक्ति से बाहर हैं परन्तु अपने कार्य जनित अभिनव द्वारा अनुभव किये जा सकते हैं। तीसरे वह जो सबसे सूक्ष्म होते हैं तथा केवल भावगम्य हैं, इन्हें केवल विशेष बोध के द्वारा ही समझा जा सकता है। "विशेष बोध" वास्तव में ज्ञान–बोध की सीमा के भीतर होने वाले वैचारिक प्रतिबिम्ब के अलावा और कुछ नहीं है। आध्यात्मिक समुन्नत व्यक्ति ही अपने धारणाशील विकसित मन के सूक्ष्मतर गहन पर्तो में इन सूक्ष्मतम अणुजीवत को महसूस कर पाते है। रूसी रसायन शास्त्री मेण्डलीफ द्वारा "आवर्त सारणी" (पीरियोडिक टेबल) का विकास, वैज्ञानिक केकुले द्वारा कार्बन यौगिकों की संरचना की खोज तथा बारबारा मैंकक्लिण्टाफ द्वारा उछलने वाले जीन्स की खोज धारणाशील विकसित मन द्वारा विशेष बोध की क्रियात्मक अभिव्यक्तियाँ है और सूक्ष्म अणुजीवत का अभिप्रकाश है।

माइक्रोवाइटा सभी जगह आ जा सकते हैं। उनकी कोई सीमा नहीं। ये ग्रहों, उपग्रहों, निहारिकाओं, आकाश–गंगा आदि हर जगह समस्त ताप व चाप के बन्धनों को पार कर ब्रह्मांड में विचरण करते रहते हैं। उनकी गति में कोई भी माध्यम बाधक नहीं है। इनकी गति का माध्यम हमारी तन्मात्रताएँ भी है। वे शब्द, स्पर्श, गन्ध, प्रकाश, वायु व मन के द्वारा एक स्थान से दूसरे स्थान तक जा सकते हैं। सूक्ष्मतम् अणुजीवत तो विचारों के माध्यम से भी एक स्थान से दूसरे स्थान पर जा सकते हैं। महान व्यक्ति अपने अत्यधिक विकसित मस्तिष्क द्वारा अपने विचारों को इन्ही अणु जीवत् की सहायता से सम्पूर्ण ग्रह अथवा ब्रह्माण्ड में प्रसारित कर सकते है।

इतना सभी कुछ होते हुये भी माइक्रोवाइटा दूसरे जीवों की तरह जीते हैं, मरते हैं तथा एक से दो होते हैं। विभिन्न ग्रहों पर ये ही जीवन की सृष्टि करते हैं। माइक्रोवाइटा अपनी रहस्यमय गति से मन एवं शरीर का निर्माण करते हैं, साथ ही उनका विनाश भी। अतः इस जगत का मूल कारण माइक्रोवाइटा है न कि एक कोषीय प्रोटोजोआ या कार्बन एटम।

कार्य के अनुरूप अणुजीवत ऋणात्मक, धनात्मक अथवा उदासीन होते हैं। ऋणात्मक अणुजीवत पदार्थ निर्माण व उनका ज्ञान करवाते हैं। धनात्मक अणुजीवत मनोविज्ञान और पराज्ञान की वस्तु हैं। आध्यात्मिक रूप से उन्नत व्यक्ति माइक्रोवाइटा की गति व क्रिया पर नियन्त्रण कर सकते हैं। हमारे शास्त्रों में वर्णित चमत्कार व वरदान और कुछ नहीं, अपितु ऋषि महात्माओं का अणुजीवत के सही प्रयोग के ही उदाहरण हैं।

धनात्मक तथा ऋणात्मक दोनों ही माइक्रोवाइटा मानव शरीर में विभिन्न भौतिक एवं मानसिक क्रियाकलापों को त्वरित करते हैं, हालांकि दोनों का प्रभाव भिन्न–भिन्न होता हैं। उदाहरण के तौर पर धनात्मक माइक्रोवाइटा से मन उच्च वृत्तियों में प्रतिष्ठित होकर सूक्ष्मानुगामी तथा मानसाध्यात्मिक विकास की ओर अग्रसर होता हैं ; विचारों में विस्तृता, महत की आकांक्षा तथा सर्वात्मक स्वाधीनता की भावना जगती हैं। सभी कार्य करते हुए भी मन निर्लिप्त रहता हैं, कर्तव्य पालन तथा अन्याय के विरूद्ध आवाज उठाने की क्षमता जगती हैं। इसके विपरीत ऋणात्मक माइक्रोवाइटा से मन में निम्न वृतियों का बाहुल्य होता हैं और वह जड़ता एवं पाश्विकता की ओर बढ़ता हैं। विचारों में संकुचन, भौतिक सम्पदा की चाह तथा मात्र आर्थिक, सामाजिक एवं राजनैतिक स्वतन्त्रता की भावना जगती हैं। मन अच्छे कार्यों के प्रति उदासीन रहता हैं। उसमें अकर्मण्यता तथा अन्याय सहने की निम्न भावनाएँ प्रस्फुटित होती हैं।

जैसे मानव शरीर में धनात्मक एवं ऋणात्मक माइक्रोवाइटा से शारीरिक एवं मानसिक विकास होता हैं वैसे ही इस विश्व में भी दोनों का सन्तुलन आवश्यक हैं। जब ऋणात्मक माइक्रोवाइटा की सम्पूर्ण शक्ति बढ़ जाती है तो विनाश होता है। इसके विपरीत जब धनात्मक माइक्रोवाइटा प्रबल होते हैं तो आध्यात्मिक क्रांति होती है। वर्तमान युग ऋणात्मक अणुजीवत की अधिकता से विनाश की स्थिति में है। इसे बचाने का मात्र उपाय है कि सभी को धनात्मक माइक्रोवाइटा की अधिकता को बढ़ाने की ओर सामुहिक रूप से लग जाना चाहिये अन्यथा मानव समूह ही नहीं अपितु सम्पूर्ण जीव तथा निर्जीव समूह एक अन्धकारमय भविष्य की ओर अग्रसर हो जायेगें।

इसी सन्दर्भ में श्री सरकार का यह कथन कितना महत्वपूर्ण है कि "हमें तुरन्त बिना किसी देर के माइक्रोवाइटा पर अनुसंधान शुरू कर देना चाहिये, अन्यथा आधुनिक समाज की कई महत्वपूर्ण समस्याएँ सही ढंग से नहीं सुलझ सकेगी"। उनका अनुमान है कि सम्भवतः भविष्य में ऋणात्मक माइक्रोवाइटा का आगमन तथा उनसे उत्पन्न विभिन्न जीवन संहारक व्याधियों का इस पृथ्वी पर बाहुल्य होगा। अतः अभी से हमें इसके लिये तेयार होना चाहिये। उनको नियन्त्रित करने के लिये अनुसंधान शुरू कर देना चाहिए ताकि कहीं ऐसा न हो कि हम हाथ पर हाथ धरे बैठे रह जाएँ और हमारी आँखों के सामने अमूल्य मानव जीवन देखते–देखते नष्ट हो जाए।

हम में से कई इन ऋणात्मक माइक्रोवाइटा से प्रभावित हैं जो शारीरिक कष्ट एवं मानसिक अशान्ति का कारण बने हैं। इन विनाशकारी माइक्रोवाइटा से अप्रभावित रहने का शायद सबसे सरल एवं उत्तम तरीका यही है कि व्यक्ति कठोर रूप से यम व नियम में प्रतिष्ठित रहे, नियमित रूप से दोनों समय उचित मानसाध्यात्मिक साधना करे तथा उचित खान पान यथा अकार्बनिक भोजन का व्यवहार करे। ऐसे व्यक्ति को ऋणात्मक माइक्रोवाइटा प्रभावित नहीं करते। श्री सरकार द्वारा प्रदर्शित कई प्रयोगों से इन सब बातों की पुष्टि होती है तथा माइक्रोवाइटा के अस्तित्व में कतई भी संशय नहीं रह जाता।

अणुजीवत की शक्ति अणु शक्ति से लगभग एक लाख गुना अधिक अनुमानित है। आज विज्ञान की उन्नति इस सीमा तक पहुँच गई है कि जीन्स, डी॰एन॰ए॰ के विभाजन, विश्लेषण व पुर्नगठन से चमत्कारी पेड़, पौधे, पशु व मानव उत्पन्न होने की सम्भावना स्पष्ट होने लगी है। एक कदम आगे ही माइक्रोवाइटा का रहस्यमय संसार है, जहाँ से अन्य बातों के अलावा व्यक्ति व समाज की मानसिकता व चरित्र को वैज्ञानिक ढंग से बदल सकने की क्षमता भी मानव के हाथों में आ जायेगी। कितना सुखद संसार होगा।

विश्व एक नई करवट लेने के लिये तैयार है। समस्त मानवता सुदूर क्षितिज पर फैली अरूण आभा की ओर उत्सुकता से निहार रही है। मनुष्य माइक्रोवाइटा के ज्ञान द्वारा सृष्टि की समस्त विधाओं में परिवर्तन करने को तत्पर है। इसी माइक्रोवाइटा के ज्ञान द्वारा मानव अब जड़ तथा जीव की परिभाषाओं को बदलकर भौतिक विज्ञान की समस्त उपलब्धियों को मानसिक व आध्यात्मिक जगत की उपलब्धियों से जोड़ने का उपक्रम कर रहा हैं। जीवन के सभी क्षेत्रों में आमूल–चूल परिवर्तन की श्रृंखला का सूत्रपात हो रहा है। देखना यह है कि मनुष्य किस तरह इन माइक्रोवाइटा की मदद से स्वयं एवं समष्टि का कल्याण कर सकता है।

- डॉ. एस. के. वर्मा

सह सम्पादक की कलम से.....

होली की अग्नि में स्वाहा सेमल के आँसू

होलिका दहन के नजदीक आते–आते देववृक्ष सेमल की सिसकियाँ तेज होने लगती है। उसे आभास है कि इस बार भी उसे ही कटना होगा, जलना होगा और मानव समाज की भावजड़ता का कोप भाजन बनना होगा। प्रकृति ने जो नुकीले कांटे देकर उसकी जानवरों से रक्षा कर दी, अग्निरोधक बनाकर जंगल की आग से बचाया, ऋषियों ने उसे देववृक्ष कहकर मान बढ़ाया तथा पंचवटी के वृक्षों में गिनाया। परन्तु मनुष्य ने अविवेकपूर्ण तरीके से इसे समूल नष्ट करने का दुस्साहस किया और उसे किवंदन्तियों से जोड़कर भावजड़ता का रंग देकर, धार्मिक अनुष्ठान बनाकर कुल्हाड़ी चला दी। काटा लेकिन बोया नहीं जैसा कि जनजातियों के पूर्वज किया करते थे, वे काटते थे लेकिन 'हेमलो रोपलो रे.....' के गीतों के माधुर्य में नया बोते और उसकी रक्षा करते थे।

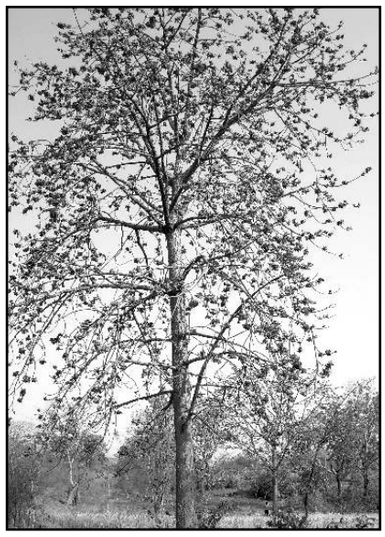

पारम्परिक चिकित्सा पद्धतियों में इसके फूल, पत्ती, तना, जड़, गोंद आदि को कमजोरी, नपुंसकता, मधुमेह, हृदयरोग, स्त्रियों के रोग, अल्सर आदि रोगों असरकारी माना है। आधुनिक चिकित्सा विज्ञान ने अन्वेषण द्वारा इस वृक्ष के अंग–प्रत्यंग को विभिन्न बीमारियों में औषधि के लिये उपयोगी माना है। इसकी रेशम सी कोमल रूई, गद्दे, तकिये आदि के भरने में काम आती है तथा इसकी लकडी माचिस, खिलौनें, छापें तथा नाव बनाने में प्रयोग ली जाती है। विशाल सेमल वृक्ष मधुमक्खियों के छत्तों का सुन्दर स्थल है तथा ग्रेटर एडजुटेन्ट स्टोर्क का निवास स्थल भी है। वातावरण के तापमान को नियंत्रित करने के लिए फ्लोरिडा (अमेरिका) में इस पर कार्य चल रहा है।

विडम्बना यह है कि रीति–रिवाजों और परम्पराओं के चलते भावजड़ता की जकड में हर वर्ष होलिका–दहन में उदयपुर और आसपास के क्षेत्रों में करीब 2000–2500 सेमल वृक्षों की कटाई आम बात है। कोई रोकने वाला नहीं – सेमल के आँसू पोंछने वाला नहीं। क्या पर्यावरणविद् गहरी नींद सो रहे हैं ? क्या वन विभाग ने इस ओर से आँखें मूंद ली है ? क्या किसी सम्भ्रांत नागरिक ने इस ओर दृष्टिपात किया है? क्या प्रकृति–प्रेमियों ने इसके गहरे लाल फूलों की ज्योति कम होते हुए नहीं देखी ? इन सभी से आगाज है कि बहुत हो चुका अब नहीं – होली मनायें परन्तु किसी प्रजाति के रूदन की अनदेखी कर – उसको नष्ट कर नहीं। स्कूल, पंचायत, गाँव, शहरों सभी स्तर पर विभिन्न माध्यमों से जन चेतना जगायें – नये सेमल के पौधे लगायें, पुराने वृक्षों को काटने से बचायें – होली जलायें परन्तु सेमल की सम्पूर्ण प्रजाति को जलाकर नष्ट न कर देवें।

''अन्धविश्वास को जलायें, सेमल को बचाएँ,
सेमल संरक्षण मिशन में सभी हाथ बटाएँ।''

प्रभात संगीत में सेमल चित्रण

''प्रभात संगीत'' श्री प्रभात रंजन सरकार द्वारा रचित 5018 विलक्षण गीतों का संग्रह है। भाव, भाषा, सुर और लय का माधुर्य लिये यह भक्ति, आध्यात्मिक जागृति, प्राकृतिक सौन्दर्य, सामाजिक अभ्युदय, लोक जीवन, बालमन, आदि को परिलक्षित करते गीतों का एक अनुपम संग्रह है और अपने–आप में एक घराना है। प्रभात संगीत के 31 गीतों में देववृक्ष सेमल का उल्लेख 'शिमुल' व 'शाल्मली' रूप में मिलता है। कहीं पर इसके सुन्दर लाल फूलों को फाल्गुन के स्वागत में हँसते, गाते और नाचते हुए चित्रित किया गया है तो कहीं शुष्क रेतीली धरती पर शान्ति के साथ परमपुरूष को याद करते हुए वर्णित किया गया है। फाल्गुन में होली के आगाज के साथ ही शिमुल का आगाज भी हो जाता है जो कि फाल्गुन से जुड़े हर एक गीत में दिखता है। जरूरत है कि देववृक्ष के इस आगाज को सुनें, समझे और इसे जीवंत रखने का भरपूर प्रयास करें।

प्रभात संगीत 4108

शिमुल फूलेर मधु मेखे
के एलो गो के एलो
भालोबेसे काछे एसे
बसंत दीप ज्वालालो
के एलो गो के एलो।
भ्रमर नूतन आशा निये
कुहु केका भाषा पेये
किशलय रंग लागिये
शिहरणे मातालो
के एलो गो के एलो।।
भोरेर आलोय लागलो भालो
मंदानीले के जानालो
फागेर फागुन एसे गेलो
के एलो गो के एलो।।

वह कौन है जो शिमुल पुष्प के मधु में सुवास लेकर आया है? उसने प्यार से पास आकर बसंत के दीप जला दिये है। भंवरों में नई आशा और कोयल की कूक में भाषा का प्रार्दुभाव हुआ है। कोमल कोंपलों में रंग आने के साथ ही उनमें सिहरन का संचार हुआ है। भोर का प्रकाश अब सुहावना लगने लगा है। अंततः मंद बयार ने बसंत ऋतु के आने की घोषणा कर दी है।

वर्तिका जैन

WHAT IS MICROVITA ?

Microvita : Micro- Small, Vita- Living

Definition : Entities or objects which come within the realm of both physicality and psychic expressions, which are smaller or subtler than atoms, electrons or protons; and in the psychic realm, may be subtler than ectoplasm or its extra-psychic coverage; endoplasm have been termed as "Microvita" (Singular- Microvitum) by Shri P. R .Sarkar.

Physicality : The position of microvita is just between ectoplasm and electron, but they are neither ectoplasm nor electron.

Categories :

A) Based on density or subtlety -

First : Coming within the scope of a highly developed microscope.

Second : Not coming within the scope of a perception but coming within the scope of perception as a result of their expression or actional vibration.

Third : Not coming within the scope of common perception but coming within the scope of a special type of perception which is actually the reflection of conception within the periphery of perception.

B) Based on nature -

1. Positive
2. Negative
3. Neutral/Ordinary

Movement :

- Move throughout the entire universe.
- Move unbarred, without caring for the atmospheric conditions.
- Move through a medium or media i.e. sound, form, figure, smell, tactuality or ideas.

Root cause of life :

Microvita create minds and bodies and also destroy minds and physical bodies. The root cause of life is not the unicellular protozoa or unit protoplasmic cell, but this unit microvitum.

To,

_____

_____

_____

_____

From :

Society for Microvita Research and Integrate Medicien (SMRIM)
28, Shivaji Nagar, UDAIPUR-313001 (Raj.) INDIA
Telephone : +91-294-2484809, E-mail : skvermaster@gmail.com

AIMS AND OBJECTIVES OF SMRIM :

1. To propagate the knowledge and science of microvita by psycho-spiritual practice in individual and collective life.
2. To increase moral values, to generate scientific thinking, to remove dogma with the spread of knowledge of microvita at school, college and university levels.
3. To initiate and inspire about research on Yogic, Vaedic, Naturopathic, Ayurvedic and Homoeopathic schools of medicine.
4. To incorporate faculty of Physics, Chemistry, Botany and Medicine for research on microvita and integrated medicine; including research on medicinal plants and Homoeopathic medicine.
5. To organize free medical camps in villages and cities involving specialists of different system of medicine.
6. To publish result of the research in national and international journals and interact with other people working in the field in and out of the country.
7. To make judicious use of different systems of medicine and microvita for the treatment of diabetes, hypertension, heart diseases, cancer and diseases of modern era.
8. To establish laboratory and research centers for relentless research on microvita and integrated medicine for the welfare of entire humanity.

Who can join?

Any person interested in serving humanity through research on microvita and integrated medicine and abides rules and regulations of the society can become the member of the society.

Life Membership fee : Rs. 1500/- (Once)

Contact :
PRESIDENT SMRIM
28, Shivaji Nagar, UDAIPUR-313001 (Raj.) INDIA
Telephone : +91-294-2484809, E-mail : skvermaster@gmail.com

"There should be extensive research work regarding this microvitum or these microvita. Our task is gigantic and we are to start our research work regarding these microvita immediately without any further delay, otherwise many problems in modern society will not be solved in a nice way".

- P. R. Sarkar

Published by : Society for Microvita Research and Integrated Medicine (SMRIM), Udaipur (Raj.) INDIA
Editor in Chief : Dr. S.K. Verma
Assoc. Editor : Vartika Jain
Printed at : National Printers, 124, Chetak Marg, Udaipur (Raj.)

FOR MEMBERS ONLY